No. of Questions =60

TimeS = 1 Hour

प्र.1– "The Clothing one wears plays an important part in one's adjustment to the social group"

यह कथना किसका है

(1) निकेल एवं डार्सी* (2) रेयाल (3) फ्लोरेंस निकोलस (4) लाबारथे

प्र.2– तेरहा, जामदानी पन्ना हजारे प्रकार की साड़ियॉ बनती है?

(1) बनारस (2) गुजरात में (3) ढाका बंग्लादेश* (4) ग्वालियर में

प्र.3– पटोला वस्त्र निर्माण कहॉ की विशेषता है ?

(1) बिहार (2) बंगॉल (3) गुजरात* (4) राजस्थान

प्र.4– उपहोलसटरी का उपयोग होता है?

(1) सूट बनाने में (2) गर्म कपड़े बनाने में (3) फर्नीचर को ढकने में* (4) उपरोक्त सभी में

प्र.5– ऊनी वस्त्रों को इस्तरी करते समय निम्न में से किस बात का ध्यान रखना चाहिए?

(1) इस्तरी अधिक गर्म न हो (2) सूती या मलमल के कपड़ों से ढंकर इस्तरी करें

(3) उपरोक्त दोनों* (4) उपरोक्त में कोई नहीं

प्र.6– वस्त्रों की लघुत्तम इकाई है–

(1) धागा (2) रेशा* (3) ऐंठनयुक्त धागा (4) ऐंठनरहित धागा

प्र.7– जादुई रेशा कहा जाता है–

(1) जूट के रेशे को (2) रेशमी रेशों को (3) ऊनी रेशों को (4) कृत्रिम रेशों को*

प्र.8– वस्त्र की कार्यक्षमता से तात्पर्य है–

(1) वस्त्र की मजबूती एवं टिकाऊपन (2) वस्त्र की सुन्दरता एवं आकर्षण

(3) व्यक्ति की कार्यक्षमता में वृद्धि होना* (4) उपरोक्त सभी

प्र.9– गर्मी के मौसम के लिए–

(1) गहरे रंग का सूती वस्त्र अच्छा रहता है (2) हल्के रंग का सूती वस्त्र अच्छा रहता है*

(3) रेशमी वस्त्र अच्छा रहता है (4) कृत्रिम वस्त्र अच्छा रहता है

प्र.10– गूँधना एवं निपीडन विधि से धुलाई की जाती है–

(1) ऊनी वस्त्रों की (2) रेशमी वस्त्रों की (3) रेयॉन वस्त्रों की (4) उपरोक्त सभी*

प्र.11– सर्वाधिक मजबूत रेशा है–

(1) रेयॉन (2) रेशम (3) कपास (सूती)* (4) ऊन

प्र.12– बंधन–क्षमता (Cohesiveness of Spiinnability) का अर्थ है

(1) रेशों को अपास में सटने का गुण* (2) रेशों को शीघ्रता से पूर्वाकृति ग्रहण करने का गुण
(3) रेशों के शीघ्रता से अपनी पूर्व लंबाई को प्राप्त करने का गुण (4) उपरोक्त सभी

प्र.13– प्रत्यास्थता (Elasticity) का अर्थ है

(1) रेशों द्वारा अपनी पूर्व लंबाई को प्राप्त कर लेना*
(2) रेशों द्वारा अपनी पूर्व आयतन (Volume) को प्राप्त कर लेना
(3) रेशों को आपस में सटने का गुण
(4) उपरोक्त सभी

प्र.14– सबसे अधिक आर्द्रता अवशोषक का गुण होता है–

(1) रेयॉन में* (2) नायलॉन में (3) कपास में (4) पोलिस्टर में

प्र.15– रेशों की ज्वलनशीलता की माप की जाती है–

(1) रेशों के घनत्व से (2) रेशों के आनम्यता से
(3) रेशों के प्रत्यास्थता से (4) समय से*

प्र.16– छोटे रेशों को कहा जाता है–

(1) स्टैपल* (2) फिलामेंट (3) उपरोक्त में से कोई नहीं (4) उपरोक्त सभी

प्र.17– वस्त्र की मूल इकाई है–

(1) रेशा* (2) सूत (3) यार्न (4) इनमें से कोई नहीं

प्र.18– कपास को कहा जाता है–

(1) बीज वाले रेशे* (2) तले वाले रेशे (3) पत्ते वाले रेशे (4) छाल वाले रेशे

प्र.19– लिनन के रेशे प्राप्त होते है–

(1) कपास के पौधे से (2) फ्लैक्स के पौधे से* (3) जूट के पौधे से (4) कैनेबिस सेटाइवा के पौधे से

प्र.20– कोयॉर प्राप्त किया जाता है–

(1) नेटेल के तने से (2) कपास के बीज से (3) जूट के तने से (4) नारियल के छाल से*

प्र.21– जूट का उत्पादन सर्वाधिक होता है–

(1) चीन में (2) अमेरिका में (3) आस्ट्रेलिया में (4) बंगलादेश में*

प्र.22– एस्बेस्टस के रेशे पाये जाते है–

(1) चट्टानों से* (2) पौधे से (3) जानवरों से (4) प्रयोगशाला में तैयार करके

प्र.23– ढाका की मलमल का निर्माण होता था–

(1) कपास के रेशों से* (2) सिल्क के रेशों से (3) लिनन के रेशों से (4) नायलॉन के रेशों से

प्र.24– जूट के रेशों से तैयार किये जाते है–

(1) परिधान हेतु वस्त्र (2) बोरे, रस्सियॉ, टाट, चटाई* (3) उपरोक्त सभी (4) उपरोक्त में से कोई नहीं

प्र.25– ऊन के रेशे बने होते है –

(1) प्रोटीन के* (2) कार्बोज के (3) प्रोटीन एवं कार्बोज के (4) वसा के

प्र.26– विश्व का सबसे महॅगा "कोट मिंक" बनता है –

(1) विक्यूना के बालों से* (2) मेरीनो जाति के भेड़ के बालों से
(3) कश्मीरी बकरी के बालों से (4) अंगोरा बकरी के बालों से

प्र.27– अरण्डी के पेड़ों पर पलने वाले कीड़े से प्राप्त रेशम को कहते है–

(1) टसर रेशम (2) एरी रेशम* (3) मूॅगा रेशम (4) जंगली रेशम

प्र.28– राजसी वस्त्र कहा जाता है–

(1) सूती वस्त्रों को (2) लिनन वस्त्रों को (3) संश्लेषित वस्त्रों को (4) रेशमी वस्त्रों कों*

प्र.29– नायलॉन के धागे की सतह पर छोटे–बड़े लूप अथवा रोएॅ उठाये जाते हैं। इस धागे को कहते हैं–

(1) स्ट्रेच धागे (2) बहुरेखीय धागे (3) स्पन धागे (4) टेक्सचर धागे*

प्र.30– वॉश एण्ड वीयर (Wash and Wear) वस्त्र निर्मित होता है–

(1) टेरीलीन एवं ऊन के रेशों से (2) टेरीलीन एवं रेयॉन के रेशों से
(3) टेरीलीन एवं सूती रेशों से* (4) उपरोक्त में से कोई नहीं

प्र.31– ऊन का उत्तम अनुकल्प (Substitue) है–

(1) रेशम (2) नायलॉन (3) आरलॉन* (4) टेरीलीन

प्र.32– टेंटरिंग परिसज्जा द्वारा–

(1) वस्त्र को सभी जगहों से समान चौड़ाई का बनाया जाता है*
(2) दाग–धब्बे छुड़ाये जाते है
(3) वस्त्र की सतह पर पानी के हर के समान नमूने बनाये जाते है
(4) नक्काशी किया जाता है

प्र.33– कैलेडरिंग (Calendering Finshing) परिसज्जा द्वारा–

(1) वस्त्र पर लगे दाग–धब्बे छुड़ाये जाते है (2) वस्त्र की सतह पर रोएँ उठाये जाते है
(3) वस्त्र की सतह को चिकना, चमकदार एवं कोमल बनाया जाता है* (4) रचना सघन बनाया जाता है

प्र.34– विरंजन परिसज्जा द्वारा–

(1) वस्त्र को अग्नि अवरोधक बनाया है (2) जल अभेद्द (Water Proof) बनाया जाता है
(3) फफूँदी अवरोधक (Mildew Proof) बनाया जाता है (4) वस्त्र पा सफेदी लगाई जाती है*

प्र.35– अवकारक विरंजक पदार्थ (Oxidising Bleaching Agent) में प्रमुखता होती है–

(1) ऑक्सीजन की* (2) हाइड्रोजन की (3) उपरोक्त दोनों की (4) उपरोक्त सभी की

प्र.36– अवकारक विरंजक पदार्थ (Reducing Bleaching Agent) में प्रमुखता होती है–

(1) ऑक्सीजन की (2) हाइड्रोजन की* (3) उपरोक्त दोनों की (4) उपरोक्त सभी की

प्र.37– वस्त्रों पर एन्टी–स्नैग परिसज्जा दी जाती है, क्योंकि –

(1) इसमें वस्त्र नहीं सिकुड़ते है (2) वस्त्र को फफूँद एवं बैक्टीरिया नुकसान नहीं पहुँचाते है
(3) इससे बुने हुए वस्त्र नहीं उघड़ते है* (4) उपरोक्त में से कोई नहीं

प्र.38– बाँधकर वस्त्र को रंगने की कला को –

(1) बाटिक कला कहते है (2) बाँधनी कहते है* (3) पेन्टिग कहते है (4) उपरोक्त में से कोई नहीं

प्र.39– चंदेरी सांड़ियाँ प्रसिद्ध है –

(1) बिहार कीं (2) बंगाल की (3) मध्यप्रदेश की* (4) महाराष्ट्र की

प्र.40– पीताम्बर वस्त्रों का निर्माण होता है –

(1) हैदराबाद के पैठण में* (2) राजस्थान के जयपुर में
(3) गुजरात के कच्छ में (4) उत्तरप्रदेश के बनारस में

5000

प्र.41– कश्मीर का पश्मीना शॉल निर्मित किया जाता है –

(1) सूती रेशों से* (2) ऊनी रेशों से (3) रेयॉप रेशों से (4) रेशमी रेशो से

प्र.42– सबसे अच्छी एवं उत्कृष्ट श्रेणी की दरी होती है –

(1) लिनन की (2) सूती की (3) जूट की (4) ऊन की*

प्र.43– उत्कृष्ट श्रेणी का तौलिया होता है –

(1) लिनन एवं सूती मिश्रित धागों से बनी तौलिया (2) रेयॉन के धागों से निर्मित तौलिया
(3) लिनन, सूती एवं रेयॉन के मिश्रित धागों से निर्मित तौलिया* (4) सूती धागों से निर्मित तौलिया

प्र.44 – दुल्हन के सिर को ढॅकने वाला वस्त्र कहलाता है–

(1) साड़ी (2) पंचरंगा (3) वेल या पेछौरा* (4) लॅहगा–चुन्नी

प्र.45 – वस्त्रों को कुछ समय का विश्राम देने से–

(1) उनकी कार्यक्षमता बढ़ती है* (2) सुंदरता बढ़ती है (3) आकर्षण बढ़ती है (4) उपरोक्त में से काई नहीं

प्र.46 – अम्लीय प्रतिकर्मकों से दाग–धब्बे छुड़ाये जाते है–

(1) प्राणिज रेशों के* (2) वनस्पतिज रेशों के (3) उपरोक्त दोनो ही (4) इनमें से कोई नहीं

प्र.47 – मॅहगे एवं बहुमूल्य वस्त्रों की धुलाई के लिए उत्तम है –

(1) गीली विधि (2) शुष्क विधि* (3) उपरोक्त दोनो ही (4) इनमें से कोई नहीं

प्र.48 – पुराने दाग छुटते है –

(1) जल्दी से (2) देरी से* (3) छुटते ही नहीं है (4) उपरोक्त सभी

प्र.49 – सिंक एवं ड्रेंनिंग बोर्ड –

(1) धुलाई सम्बधित उपकरण है* (2) सुखाने संबधित उपकरण है
(3) इस्तरी सम्बधित उपकरण है (4) संचयन सम्बधित उपकरण है

प्र.50 – धुलाई कार्य में प्रयुक्त किया जाने वाला कटोरा –

(1) धातु का बना होना चाहिए (2) प्लास्टिक तथा चीनी मिट्टी का बना होना चाहिए *
(3) उपरोक्त दोनों (4) उपरोक्त में से कोई नहीं